YOGA

EDUCATION

For Enhancing Quality in Teacher Education

Chief Editor

Dr. R.P. Asija

Editor

Dr. Anurag Asija

Scanned with CamScanner

14

मूल्यों के विकास में योगशिक्षा की भूमिका

*डॉ हेमलता जोशी**

सृष्टि में अनादिकाल से दो प्रकार की वृत्तियों का बोलबाला सदैव ही रहा है जिनमें एक है आसुरी वृत्ति और दूसरी है दैवीय वृत्ति। आसुरी वृत्ति जहां स्वार्थ सिद्धि तथा दूसरों के अहित के लिए उत्तरदाई होती है वहीं दैवीय वृत्ति आत्म–कल्याण तथा पर–कल्याण दोनों के लिए उत्तरदाई होती है। अतः यही वृत्ति जीवन को सजाने, संवारने, निखारने और ऊंचाईयां प्रदान कराने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसी का परिणाम है जीओ और जीने दो, वसुधैव कुटुबकम्, मित्ति में सव्व भूएसु, अहिंसा परमो धर्मः आदि। इसी वृत्ति के कारण ही ये सूक्तियां चरितार्थ होती हैं, सार्थक बनती हैं। इससे स्वतः अनुमान लगाया जा सकता है कि दैवीय वृत्ति वास्तव में आवश्यक ही नहीं वरन् अनिवार्य भी है। अतः यही वह वृत्ति है जिसे मूल्य कहा जा सकता है। मूल्य शब्द स्वतः मूल्यवान है क्योंकि मूल्य श्रेष्ठ विचार के रूप में होते हैं और अच्छे व्यवहार के रूप में प्रकट होते हैं। इसी की अपेक्षा मानव से की जाती है क्योंकि यही मानवता है।

मूल्यों की आवश्यकता

सृष्टि का प्रत्येक प्राणी सदैव सुख की खोज करता है। विषम परिस्थितियों से वह दूर रहना चाहता है, उन्हें हटाना चाहता है और अनुकूल परिस्थितियों के लिए प्रयास करता रहता है। यह उसका नैसर्गिक गुण है, उसकी प्रकृति है, उसका स्वभाव है। जहां पर मानव की बात है वह अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ है। अतः उसके सुख का स्तर भी अन्य प्राणियों की अपेक्षा कहीं अधिक होता है। मानव सामाजिक प्राणी है। समाज में रहने के लिए व्यवहार एक दूसरे से जोड़ने का सशक्त माध्यम है। अतः महत्त्वपूर्ण है कि व्यवहार कैसा हो–अच्छा या बुरा। व्यवहार अच्छा है तो व्यक्ति ही नहीं वरन् समाज में भी उसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और व्यवहार गलत है तो व्यक्ति एवं समाज दोनों पर ही इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसी व्यवहार के कारण समाज के दो भेद हो जाते हैं स्वस्थ और रुग्ण। स्वस्थ समाज वह है जिसमें मूल्यों की महत्ता हो अर्थात् जिसमें अहिंसा, प्रामाणिकता, मैत्री, प्रेम, करुणा, आत्मानुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, परोपकार आदि को महत्त्व दिया जाता हो। स्वस्थ समाज में सबको आवश्यकता पूर्ति एवं विकास के समान अवसर प्राप्त होते हैं। व्यक्ति अपनी क्षमता–योग्तानुसार उन्हें प्राप्त करता है। इसके विपरीत रुग्ण समाज वह है जिसमें मूल्यों की अवहेलना हो अर्थात् जिसमें हिंसा, क्रूरता, अप्रामाणिकता, भ्रष्टाचार, नशाखोरी एवं अनेक अपराधों का बोलबाला होता हो। ऐसे समाज में अमानवीय कृत्यों की भरमार होने से विकास का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है, साथ ही ऐसा समाज धीरे–धीरे पतन के गर्त

* अस्सिटैंट प्रोफेसर, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राज.)

Scanned with CamScanner